

शांति और सद्भाव

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

शांति और सद्भाव भारतीय संस्कृति के मूल्यों में निहित हैं। यह विरासत से हमें प्राप्त है। संसार में अनेक जातियां, अनेक धर्म और अनेक मतमतान्तरों के लोग रहते हैं। उनको एक सूत्र में जोड़ने वाला बिन्दु शांति और सद्भाव ही है। जहां-जहां शांति विराजमान रहती है। वहां-वहां विकास द्रुत गति से होता है। भारतीय संस्कृति में ऐसे मूल्यों को महत्व दिया गया है कि समाज में सभी प्राणी सुखपूर्वक रह सकें। भगवान् महावीर का यह सिद्धान्त है कि हर प्राणी का आदर करो— परस्परोग्रहोजीवानाम्। इसका अर्थ है सभी प्राणी परस्पर मिलकर सहअस्तित्व के साथ रहें। कोई किसी से बैर न करे, कोई किसी से रागद्वेष न करे। यही इस सूत्र का हार्द्र है।

यह संसार सबका है किसी एक व्यक्ति या प्राणी का नहीं। इसलिए इसका उपभोग सभी संयम पूर्वक करें कोई किसी के जीवन में हस्तक्षेप न करे। प्रकृति मानव को सभी चीजे उपलब्ध करायी है। सूर्य का प्रकाश सभी लोगों के लिए है। वायु सभी के लिए है। सम्पूर्ण वायुमण्डल सभी के लिए है, आवश्यकता है इनके सदुपयोग की। यदि मानव त्यागपूर्वक इनका उपयोग करता है तो प्रकृति का खजाना कभी समाप्त होने वाला नहीं है। यदि मनुष्य सभी प्राणियों के साथ मेल-जोल सद्भावना और समतापूर्वक रहता है तो उसके जीवन में शांति बनी रहती है। शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए सहअस्तित्व की कल्पना आवश्यक है। सहअस्तित्व का अर्थ है कि जीवन जितना हमें प्रिय है उतना ही अन्य प्राणियों को भी प्रिय है।

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् अर्थात् जो हमारे अनुकूल नहीं है वैसा आचरण हमें दूसरों के साथ भी नहीं करना चाहिए। यदि हम किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप किसी अन्य प्राणी के जीवन में करते हैं तो उसको दुःख होता है। इसलिए प्रेम से और सद्भावना से किसी भी प्राणी को वश में किया जा सकता है। अहिंसा से लेकर जियो और जीने दो का सिद्धान्त ही शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की मुख्य धुरी है। आचार शुद्धि, व्यवहार शुद्धि और विचार शुद्धि के

आधार पर मनुष्य बिना किसी अतीन्द्रिय सत्ता के सहयोग से स्वयं को विकसित बना सकता है। दया और करुणा का भाव ही शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के मूल में प्रतिष्ठित है। अतः शांतिपूर्ण सहअस्तित्व कोरा दर्शन न होकर जीवन दर्शन है, जो किसी भी जीव के अस्तित्व व गरिमा को स्थापित करता है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है। अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त है। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के अनुसार मानव जीवन का उद्देश्य मात्र इतना नहीं है कि वह सत्य का साक्षात्कार करे अपितु सत्य के साक्षात्कार के साथ-साथ उस व्यवहार, को भी सतत अपने जीवन में उतारे, जिसके आधार पर उसने सत्य बोध प्राप्त किया। इसलिए भारत को सभी दर्शनों में तत्व मीमांसा के साथ-साथ आचार-मीमांसा का भी उतना ही महत्व है।

सद्भावना का अर्थ है अच्छी सोच, अच्छा विचार, अच्छा चिंतन, रचनात्मक और विधेयात्मक विचार। हम दूसरों के प्रति कैसा सोचते हैं, यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। विचार के साथ मानस से जो तरंगे निकलती हैं वह भी व्यक्ति को प्रभावित करती हैं। हमारे संसार में विचार विनिमय के साधन हैं मन, वाणी और शरीर। मन के द्वारा आदमी चिंतन करता है, वचन के द्वारा चिंतन को व्यवहार में लाता है और शरीर के द्वारा उसका क्रियान्वयन करता है। जब हम किसी अनजान व्यक्ति को अन्धे को, लूले को, लंगड़े को जिससे की हमारा कोई परिचय नहीं है, आदर के साथ उसको उसका मार्ग दिखलाते हैं, या उसके साथ सद्भावना पूर्वक बात करते हैं तो उसको भी अच्छा लगता है और आत्मीयता प्रतीत होती है। मन, वाणी और शरीर का संयम सद्भावना को व्यक्त करता है।

सद्भावना एक रचनात्मक भावना है। सद्भावना में सहनशीलता का गुण होना चाहिए। सद्भावना मानव का सबसे बड़ा गुण है। जिस मानव के अंदर यह गुण रहता है वह महान कहलाता है। जो व्यक्ति जितना सहन करके चलता है उसका चरित्र उतना ही ऊंचा होता है। चरित्र वह हीरा है जो टूटकर जुड़ता नहीं। चरित्र निर्माण मानव की स्वाधीन प्रक्रिया है। चरित्र ही ऐसा है जिसे मानव निर्मल बना सकता है। यह उसके अपने अधिकार का विषय है। मानव जीवन समता और सहिष्णुता और सद्भावना का जीवन है। भौतिक सुख-दुःख का

मानव—जीवन में कोई स्थान नहीं। उसकी सम्पूर्ण चर्या आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण होती है। जिसने संयम और सद्भावना के मार्ग को स्वीकार कर लिया है, उसके जीवन में कठोर और मृदु संवेदनों का आना आवश्यक है।

मानव में जीवन यापन के दो प्रमुख आयाम होने चाहिए— अहिंसा और कष्ट सहिष्णुता। कष्ट सहने का अर्थ शरीर, इन्द्रिय और मन को पीड़ित करना नहीं, किन्तु अहिंसा आदि धर्मों की आराधना को सुस्थिर बनाये रखना है। सज्जन व्यक्ति का कार्य है यदि बिच्छू जल में गिरा है तो उसे बाहर निकाल दें और बिच्छू का कार्य है डंक मारना। सज्जन व्यक्ति की सद्भावना इस कार्य में दिखायी पड़ती है कि वे दूसरों के साथ सदैव अच्छा व्यवहार करते हैं। शांति एवं सद्भावना का मार्ग राष्ट्रहित का मार्ग है।